रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :– ,
सम्पादक, इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट, 127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –23 ● कानपुर 1 से 15 दिसम्बर 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

आवश्यक सूचना

समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को सूचित किया जाता है कि वे अपना ई–मेल आई0डी0 व मोबाईल नं0 कार्यालय को प्रेषित करें ताकि उन्हें नवीनतम सूचनायें E-mail अथवा S.M.S. के माध्यम से भेजी जा सके।

रजिस्ट्रार
registrarbehmup@gmail.com

निर्णायक स्थिति पर पहुँचा रही है इहमाई

- ✓ निर्णायक तिथि करीब
- ✓ इहमाई की भूमिका महत्वपूर्ण
- ✓ मिलने लगे है संकेत
- ✓ दिसम्बर के बाद बनेगी स्थिति
- ✓ चिकित्सकों को मिलेगा सम्मान

10 महीनों से पूरे देश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ जिस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था धीरे–धीरे वह समय अब करीब आता जा रहा है, इन 10 महीनों में पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मध्य एक अजीब सी गहमागहमी रही।

28 फरवरी, 2017 से शुरू हुई यह गहमागहमी धीरे–धीरे शान्त हो रही है फरवरी और मार्च का महीना बहुत गरम रहा, अप्रैल में जब प्रपोज़लों के वापसी की चर्चा हुई तब एक नीरवता सी छा गयी थी परन्तु जब लोगों ने वास्तविकता को समझा तो थोड़ी समझदारी बढ़ी और जो एक होड़ सी लगी थी प्रपोज़लों के भेजने की उसमें थोड़ी सुस्तता आयी, हमारे साथियों ने संयम और समझदारी से काम लेना शुरू किया, फरवरी और मार्च के महीने में जो लोग चर्चा नहीं करते थे वह मई और जून के महीने में एक दूसरे से सम्पर्क करने लगे और यह विचार भी होने लगा कि किसको प्रतिवेदन देना है और किसको प्रतिवेदन नहीं देना ! इन्हीं सब झंझावातों में उलझे हुए जुलाई की 28 तारीख आयी, यह तिथि अपने आप में एक नया अध्याय लेकर आयी, इस दिन लोक सभा में देश की स्वास्थ्य राज्यमंत्री माननीया अनुप्रिया पटेल जी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में प्रस्तुत किये गये प्रश्नों का जो उत्तर दिया और समाचार पत्रों ने जिस तरह इस कार्यवाही को छापा इससे पूरे देश में एक विचलन का भाव पैदा हो गया।

सामान्य इलेक्ट्रो होम्योपैथों की क्या बात करें जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन के अगुवाकार हैं वह भी अन्दर तक हिल कर रह गये, लोगों के मन में इस बात का भय घर कर गया कि कहीं 25 नवम्बर, 2003 के समय की पुनर्वृत्ति तो नहीं हो रही है ! एक अघोषित भय से सभी पीड़ित थे परन्तु इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया जो सतत् जागरूक रहती है उसने इस विषय को गम्भीरता से लिया और माननीया मंत्री जी के उत्तर की समीक्षा की उस समीक्षा में यह आया कि माननीया मंत्री जी ने ऐसा कुछ कहा ही नहीं जिससे कि भय का वातावरण पैदा हो अपितु मंत्री जी ने यह कह कर कि हमने इन्टर डिपार्टमेन्टल कमेटी गठित की है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता व नियमितीकरण का विषय देखेगी इस बात की पुष्टि कर दी कि भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण के लिए प्रतिबद्ध है परन्तु हमारे साथियों के बीच जो नकारात्मकता का भाव जन्म ले चुका था उसका समाप्त होना भी आवश्यक था। अस्तु इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया व बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के अधिकारियों ने यह निर्णय लिया कि पूरे प्रदेश में ताबड़तोड़ प्रेस वार्तायें कर लोगों को वस्तुस्थिति से अवगत कराया जाये और जो भय व्याप्त हो गया है उसे दूर किया जाये।

प्रेस वार्तायें प्रारम्भ हुईं अभी दो या तीन प्रेस वार्तायें ही हुई थीं कि पूरे देश में एक नये उत्साह ने जन्म लिया जो हताशा में चले गये वह पुनः उत्साहित हो गये और एक नई चेतना ने जन्म लिया एक बार फिर से पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को पर लग गये, जो लोग प्रपोज़ल की चर्चा से विलग हो चुके थे वह पुनः प्रपोज़ल देने और प्रपोज़ल के प्रारूप पर गम्भीरता से विचार करने लगे, इस दिशा में कुछ वरिष्ठ होम्योपैथों व इलेक्ट्रो होम्योपैथी के वैज्ञानिकों की कई बार गम्भीर बैठकें हुईं और इस विषय पर चर्चा हुई कि जो प्रपोज़ल भारत सरकार को प्रेषित किया जाये उसमें कोई कमी न रहने पाये।

जिन लोगों को जो करना था उन्होंने वह किया और कर भी रहे हैं, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 ने यह पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि वह प्रपोज़ल नहीं देंगे क्योंकि 28 फरवरी 2017 के पत्र के माध्यम से भारत सरकार ने जो कुछ भी देने की बात कही है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया को भारत सरकार द्वारा जारी 21 जून, 2011 के पत्र से पहले ही प्राप्त है और जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता नहीं मिलती या फिर उसका नियमितीकरण नहीं किया जाता है तब तक 21 जून, 2011 का यह आदेश प्रभावी रहेगा, धीरे– धीरे यह समय दिसम्बर तक खिसक आया और स्थितियां भी शनै शनै साम्य होने लगी हैं अभी 13 नवम्बर 2017 को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने डी0 एच0 आर0 को पत्र लिखकर इस बात की पुष्टि कर दी कि इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की मांग पर सरकार मान्यता का प्रकरण निपटाने की प्रतिबद्धता स्पष्ट कर दी है इस पत्र के आने से इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया व बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के सदस्यों में अपार हर्ष का वातावरण पैदा हो गया है और स्थिति ऐसी लगने लगी है कि 30 दिसम्बर के बाद भारत सरकार जो निर्णय देने वाली है उसमें इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

हमें यह अवसर महज़ इसलिए नहीं मिल रहा है कि हम पहले से ही भारत सरकार की दृष्टि में हैं अपितु हमें अवसर इसलिए मिल रहा है क्योंकि हम कर्म पर भरोसा करते हैं परिणामों की प्रतीक्षा वह लोग करते हैं जिन्हें अपने कर्म और बुद्धिबल पर विश्वास नहीं होता है।

आज सबकुछ धीरे–धीरे दर्पण की तरह साफ होता जा रहा है जो चित्र अभी धुंधला सा है बहुत सम्भव है कि 30 दिसम्बर आते आते स्थिति एकदम साफ हो जाये। अब बहुत दिनों तक न तो प्रतीक्षा करनी है और न ही कयास लगाने हैं अगर सबकुछ ठीक ठाक रहा तो परिणाम आशानुकूल ही होंगे और पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों का एक नया सफर शुरू होगा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया का प्रारम्भ से ही यह ध्येयवाक्य रहा है कि सबका साथ सबका विकास।

हम अपनी प्रतिबद्धता से आज भी अलग नहीं है क्योंकि हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ हमारा अपना है और उसकी प्रगति हमारी प्राथमिकता है क्योंकि हमारा मानना है कि यदि हमारा चिकित्सक समृद्ध और सक्षम होगा तो निश्चित रूप से हमारा यही चिकित्सक अपनी चिकित्सा पद्धति को सुदृढ़ और सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

जो हमारा संकल्प है अब उसके पूर्ण होने का समय आ गया है, जो कामनायें वर्षों से की जा रही थीं ऐसा लग रहा है कि आने वाले कुछ दिनों में यह सारी कामनायें पूरी होंगी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत को नया सबेरा मिलेगा।

इस नये सबेरे में हम सब परस्पर एक दूसरे का अभिवादन करते हुए मैटी की इस चिकित्सा पद्धति को अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह स्थापित करने में लग जायेंगे।

डा0 सिन्हा एक प्रेरक व्यक्तित्व

अच्छी प्रेरणायें मनुष्य को सदैव से प्रगति के मार्ग पर ले जाती हैं और यही प्रगति किसी को भी स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में डा0 नन्द लाल सिन्हा एक प्रेरिक व्यक्तित्व की तरह आज भी हम सभी का मार्गदर्शन कर रहे हैं, यह विचार डा0 सिन्हा जयन्ती सप्ताह पर बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा आयोजित सिन्हा जयन्ती सप्ताह के अवसर पर बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने व्यक्त किये।

डा0 इदरीसी ने कहा कि मुझे भी स्व0 डा0 नन्द लाल सिन्हा जी के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, पांच साल की सम्पर्क की छोटी सी अवधि में मैने जो कुछ भी सिन्हा जी से सीखा वह आज भी काम आ रहा है। जब वह सशरीर हमारे मध्य थे तब उनसे कुछ तर्क करने का अवसर भी मिल जाता था, आज जब वह हमारे बीच नहीं हैं तब भी उनके कार्य हमें प्रेरणा दे रहे हैं। परिस्थितियां बदली हैं समय भी बदला है परन्तु अगर कुछ नहीं बदला है तो वह है डा0 सिन्हा जी का प्रेरक व्यक्तित्व।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जितना गहन अध्ययन उन्होंने किया था उतना अध्ययन आज कल के लोग नहीं कर रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास नहीं हुआ है बल्कि सर्वांगीण विकास हो रहा है जो सपना डा0 सिन्हा ने 1953 में देखा था उनका वह सपना आज पूरा होता दिख रहा है। डा0 सिन्हा ने औषधि के क्षेत्र में जो कार्य किया था वह आज भी प्रासंगिक है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने कहा कि डा0 सिन्हा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए वरदान से कम नहीं थे उनके कार्य हमें प्रेरित करते हैं इस कार्यक्रम को डा0 अतीक अहमद, डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा व मो0 वसीम इदरीसी ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

वास्तविक परीक्षा

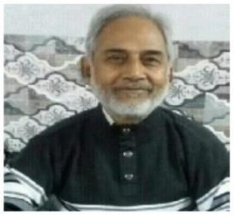

जीवन में बहुत ऐसे अवसर आते हैं जब व्यक्ति को परीक्षा देनी पड़ती है, वैसे परीक्षा तो जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक चलती ही रहती है परन्तु वास्तविक परीक्षा वह होती है जब जीवन का सबसे महत्वपूर्ण विषय अर्थात भविष्य के प्रति कोई निर्णय लेना होता है यदि उस परीक्षा में हम सफ़ल हो गये तो जीवन सार्थक हो जाता है अन्यथः जीवन संघर्ष का नाम हो जाता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में जब–जब चर्चा चलती है तो कहीं न कहीं परीक्षा शब्द प्रयोग में आ ही जाता है अतीत से लेकर वर्तमान तक परीक्षाओं का जो सिलसिला प्रारम्भ हुआ है वह आज तक अनवरत अबाध गति से चल रहा है परन्तु इतने वर्षों के बाद अब ऐसी निर्णायक घड़ी आने वाली है जो वास्तविक परीक्षा की घड़ी होगी तमाम प्रतीक्षा के बाद धीरे–धीरे समय घटते–घटते 30 दिसम्बर तक आ पहुँचा है अब मात्र 30 दिन शेष बच रहे हैं।

जैसे ही 30 दिसम्बर का समय पार हुआ उसके कुछ दिनों बाद ही सरकार ने जिस इन्टर डिपार्टमेन्टल कमेटी का गठन किया है उसके सदस्य सक्रिय हो जायेंगे और इन दस महीनों में प्रपोज़ल के नाम पर जो–जो सामग्री हमारे साथियों के द्वारा भारत सरकार को भेजी गयी है उसपर कार्य प्रारम्भ हो जायेगा और अपेक्षा की जा सकती है कि कुछ दिनों के अन्तराल में ही उसपर कोई निर्णय लिया जायेगा। यह निर्णय जितने समय में आयेगा उतने दिनों तक देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों की धड़कनें तेज़ रहेंगी।

आज जो लोग अपने अपने दावे कर रहे हैं हर एक के दावों की पोल खुल जायेगी और धीरे–धीरे जो भ्रान्तियां फैली हुई हैं वह स्वतः शमन हो जायेंगी परन्तु जो लोग यह समझते हैं कि सरकार कोई सकारात्मक निर्णय ले लेगी और इलेक्ट्रो होम्योपैथों को सबकुछ मिल जायेगा तो हमारे साथियों को यह भ्रम अपने दिमाग़ से निकाल देना चाहिये, कारण कानून बनने से लेकर नियमितीकरण की प्रक्रिया कोई आसान नहीं है।

यदि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई कानून बनाती है तो निश्चित रूप से ऐसी तमाम सारी बाध्यतायें होंगी जिनकी पूर्ति हमें ही करनी होगी और जब बात नियमितीकरण की चलेगी तो ऐसी व्यवस्थाओं का पालन करना होगा जो व्यवस्थायें सरकार द्वारा बनायी जायेंगी, जितनी आसानी से हम सब अभी काम कर रहे हैं उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य होंगे, जो भी संगठन या संस्थायें अभी तक अधिकार विहीन हैं उन्हें अपने भविष्य के लिए सचेत होना चाहिये क्योंकि नियमितीकरण का जो रास्ता है वह कानून से होकर जाता है और इसका लाभ उन्हीं संस्थाओं को प्राप्त होगा जो संस्थायें विधि सम्मत ढंग से अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए कार्य कर रही हैं।

संयोग से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जितनी भी संस्थायें हैं वह अपना स्वरूप राष्ट्रीय बताती हैं जब कि सच्चाई यह है कि चिकित्सा व्यवसाय में चाहे वह शिक्षा से जुड़ा हो या फिर चिकित्सा उसमें राज्यों को ही प्रमुखतः दी गयी है। उदाहरण स्वरूप मेडिकल काउन्सिल ऑफ़ इण्डिया का स्वरूप राष्ट्रीय है परन्तु कार्य करने के अधिकार राज्य स्तरीय काउन्सिल को ही प्राप्त हैं जिसे हम स्टेट मेडिकल काउन्सिल के नाम से जानते हैं। मेडिकल काउन्सिल ऑफ़ इण्डिया राज्यों में होने वाले कार्यों की निगरानी करती है व राज्य के हित में समय–समय में होने वाले परिवर्तनों पर सुझाव भी देती है, जैसे आजकल देश में पढ़े लिखे चिकित्सकों की कमी बहुत बतायी जा रही है और दन्त चिकित्सकों की संख्या बहुतायत में है, उनके सामने जीवन यापन की समस्या भी है, इन सब बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए कई राज्य परिषदों ने मेडिकल काउन्सिल ऑफ़ इण्डिया को यह सुझाव भेजा है कि क्यों न बी0डी0एस0 उपाधि धारक चिकित्सकों को तीन साल का ब्रिज कोर्स कराकर उन्हें एम0बी0बी0एस0 बनाया जाये यह उदाहरण देने का आशय यहां पर यह है कि प्रमाण पत्रों को देने का अधिकार राज्य स्तरीय होता है परन्तु हमारे यहां इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संस्था संचालक इस सच्चाई को समझना ही नहीं चाहते हैं और बड़े–बड़े दावे करने लगते हैं।

ऐसी स्थिति में संयम ही हमारी वास्तविक परीक्षा है कारण सरकार जब नियमितीकरण की तलवार चलायेगी तो बहुत सारी संस्थायें उसके दायरे से बाहर होंगी और यह स्थिति अराजकता को जन्म भी दे सकती है, परिस्थितियां कुछ भी हों परिणाम सकारात्मक ही आने हैं। ''जो आज आगे हैं उन्हें पीछे आने में एक पल भी नहीं लगेगा। कछुवे की चाल ही विजयी बनाती है।''

कहीं खमोशी – कहीं हलचल

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास रहा है कि यहां कभी खमोशी नहीं रहती है, कुछ न कुछ हलचल होती ही रहती है और यही हलचल इस चिकित्सा पद्धति की जीवनता का प्रमाण रहा है।

गुज़री 28 फरवरी, 2017 से निरन्तर कुछ न कुछ हलचल होती रही है एक दो प्रदेशों की क्या बात करें पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी इस समय चर्चा का विषय बनी हुई है और यही चर्चा सम्पूर्ण इलेक्ट्रो होम्योपैथों को एक नई ऊर्जा प्रदान कर रही है।

सम्भवतः हम सभी लोग इस बात से परिचित हैं कि किस तरह से सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण की व्यवस्था करने का प्रयास किया है और इस व्यवस्था को बनाने के लिए सरकार ने जो रूपरेखा तय की है उसमें एक तरह से सभी शीर्ष संगठनों सहित लगभग सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों की सहभागिता सुनिश्चित की गयी है।

28 फरवरी, 2017 से प्रपोज़ल देने की जो प्रक्रिया प्रारम्भ हुई थी वह अनवरत अभी भी चल रही है और 30 दिसम्बर, 2017 की तिथि तक प्रारम्भ रहेगी वैसे तो अधिकांश लोगों ने प्रपोज़ल के माध्यम से अपने विचार भारत सरकार तक प्रेषित कर दिये हैं परन्तु कुछ संस्थायें अभी भी शेष हैं, जिनके मन में प्रपोज़ल भेजने का विचार चल रहा है और हो सकता है कि शायद दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह सबसे व्यस्ततम रहे, इस सप्ताह वह लोग प्रपोज़ल भेज सकते हैं जो यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि कौन–कौन लोग प्रपोज़ल भेज चुके हैं ! यह इस लिए भी है क्योंकि हम भारतीयों की आज तक यही मानसिकता है कि अन्तिम तिथि की प्रतीक्षा करते हैं अधिकांशतः यह देखने को मिलता है कि चाहे कोई फार्म हो या कोई भी कार्य हो जिसकी अन्तिम तिथि निश्चित होती है हम लोग उसी अन्तिम दिन अधिक से अधिक संख्या में वह कार्य पूरा करते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति भी यही है, हम और हमारे साथी इसी क्रिया का अनुकरण करते हैं जो लोग पीछे नहीं रहना चाहते हैं वह सर्वप्रथम अपना कार्य कर लेते हैं और जो लोग यह देखते हैं कि उनके साथियों ने क्या किया ! वह प्रतीक्षारत रहते हैं और प्रतीक्षा में रहते–रहते अन्तिम तिथि तक पहुँच जाते हैं इसलिए अभी 30 दिसम्बर आने में लगभग 30 दिन बकाया हैं, हो सकता है कि इन बचे हुए दिनों में कुछ और लोग अपना प्रपोज़ल भारत सरकार तक प्रेषित करें।

जिसको जो करना है वह तो करेगा ही हम सिर्फ उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब कोई सकारात्मक निर्णय भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए लिया जायेगा, यही निर्णय पूरी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक नई दिशा देगा और हम सबके भविष्य का निर्धारण भी करेगा, इन 10 महीनों के अन्तराल में बहुत सारी हलचल और बहुत बड़ी–बड़ी बातें देखने और सुनने को मिलीं हैं परन्तु पिछला पक्ष बहुत दिनों के बाद ऐसा रहा है जब कोई बड़ी घटना नहीं घटी जो लोग या जो संगठन बहुत सक्रियता दिखाते हैं वह इस पक्ष में कुछ ज़्यादा ही शान्त रहे हैं सोशल मीडिया पर भी ऐसी कोई चर्चा या सूचना नहीं आयी है जो किसी को प्रेरित या उद्देलित करे। यह शान्ति देखकर मन यह सोचने के लिए विवश हो जाता है कि कहीं किसी तूफ़ान आने के पहले की शान्ति तो नहीं है! इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जो सक्रिय नेतागण हैं वे इस पक्ष में या तो तीर्थ यात्रा में रहे या फिर किसी मन्दिर में जाकर परमात्मा से मनोकामना पूर्ति की याचना करते दिखे हैं जो सबसे प्रबल दावेदार के रूप में अपने आप को प्रस्तुत कर रहे हैं वह भी ख़ुदा के अच्छे बन्दे की तरह मस्जिद व दरगाहों में दुआ क़बूल करने की गुज़ारिश करते हुए दिखे हैं। प्रभु के पास जाना प्रार्थना करना हर मनुष्य का कर्तव्य है और यह कटु सत्य भी है कि बिना उसकी इच्छा के कुछ भी सम्भव नहीं है, लेकिन इसके साथ–साथ यह सत्य भी स्वीकारना होता है कि हमारे किये गये कर्मों का परिणाम ही फल होता है, हमने जो कुछ भी बोया है, काटने को तो वही मिलेगा, उसमें परमात्मा क्या कर लेगा ?भारत सरकार ने जो जानकारियां हमसे मांगी हैं यदि हमने तर्कसंगत उत्तर दे दिया तो अच्छे परिणाम की अपेक्षा की जा सकती है क्योंकि इस बार भारत सरकार यह पूरा मन बना चुकी है कि वर्षों से उपेक्षित पड़ी इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को सम्मान जनक स्थान प्राप्त हो सके। यह सम्मान जनक स्थान तभी मिल सकता है जब भारत सरकार इस चिकित्सा पद्धति के लिये या तो कानून बनाये या फिर किसी ऐसी नीति का निर्धारण करे जिससे देश का लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथ बेधड़क होकर ससम्मानजनक चिकित्सा व्यवसाय कर सके सम्भावनायें तो प्रबल हैं फिर भी प्रतीक्षा तो करनी ही पड़ती है अपेक्षित परिणाम प्राप्त हों इसकी कामना तो हम सभी लोग कर ही रहे हैं परन्तु प्रयास भी करने होंगे क्योंकि 30 दिसम्बर का दिन प्रपोज़ल भेजने का अन्तिम दिन है न कि निर्णय होने का ! अच्छे निर्णय की हमें प्रतीक्षा करनी ही होगी कारण जो कुछ भी 30 दिसम्बर तक भेजा जायेगा उसकी जांच,फिर समीक्षा, तदोपरान्त हम सरकार की कसौटी पर कितना खरा उतर पाते हैं, यह तो समय ही बतायेगा, हम किसी चमत्कार की प्रतीक्षा में नहीं हैं चमत्कारों की प्रतीक्षा वह करते हैं जिन्हें अपने कर्म पर विश्वास नहीं होता है।

लोग कहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चमत्कारिक चिकित्सा पद्धति है इसके परिणाम लोगों को अचम्भित कर देते हैं यह बातें उनके मुःख से अच्छी लगती हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गुणवत्ता से परिचित नहीं हैं।

काउण्ट सीज़र मैटी ने जब पेड़ पौधों का शोध प्रारम्भ किया तब उन्होंने पाया कि इन वनस्पतियों में इतने गुण हैं जो शरीर पर चमत्कारी ढंग से कार्य करते हैं, यही कारण है कि अन्य पद्धतियों की तुलना में इस पद्धति की औषधियां बहुत अधिक प्रभावी और लाभकारी हैं, कुछ लोग यह तर्क देंगे कि जब यह चिकित्सा पद्धति इतनी उपयोगी है तब इसको अभी तक सरकार ने क्यों नहीं स्वीकारा ! उनके लिए एक ही उत्तर है कि योग्यता और स्वीकारिता दो अलग–अलग बातें हैं जो स्वीकारा जाता है वही अपनी प्रतीभा का प्रर्दशन करता है।

जिस तरह से हमारे देश में एक से एक प्रतीभावान खिलाड़ी पड़े हैं परन्तु जिस खिलाड़ी को भारतीय टीम में स्थान मिल जाता है उसका नाम और प्रतिभा दोनों प्रकाश में आ जाते हैं, ठीक इसी तरह से जिन चिकित्सा पद्धतियों को शासकीय संरक्षण प्राप्त हैं उनका विकास हो रहा है और उनके चिकित्सकों को कार्य करने का ससम्मान अवसर भी मिलता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का संघर्ष धीरे–धीरे समाप्त होने की तरफ़ है भारत सरकार जिस तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन के लिए रूचि दिखा रही है वह इस बात का स्पष्ट इशारा है कि आने वाले कुछ महीनों में भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए कुछ न कुछ निर्णय अवश्य होगा।

यह निर्णय क्या होगा ! यह तो अभी गर्भ में है परन्तु जो संकेत हैं वह यही बता रहे हैं कि जो कुछ भी होगा वह अच्छा होगा कोई संगठन या कोई व्यक्ति इसे नकार नहीं सकता तब होगी वास्तविक हलचल।

वास्तविकता से दूर कल्पना में विचरण

कल्पनाओं का मानव जीवन से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है, जीवन में बहुत सारे ऐसे क्षण आते हैं जब हम सब कल्पनाओं में ही जीते हैं और यही कल्पनायें हमें ऊर्जा भी देती हैं कुछ लोग कल्पनाओं से प्रेरित होकर अपनी भावी योजनाओं को मूर्त रूप भी दे देते हैं और इन्हीं योजनाओं के माध्यम से अपने भविष्य का निर्धारण भी करते हैं। हर व्यक्ति के अन्दर कल्पना करने की क्षमता होती है और अक्सर यह देखा गया है कि जो कल्पनायें की जाती हैं यदि उनपर वास्तविक कार्य किया जाये तो कल्पनाओं को साकार होने में तनिक भी देर नहीं लगती है यद्यपि यह भी सत्य है कि कल्पनाओं का वास्तविकता से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता है, यह ज़रूर है कि यदि व्यक्ति प्रयास करे तो कल्पनाओं को वास्तविकता में परिवर्तित किया जा सकता है। कल्पनाओं की दुनिया बेहद खूबसूरत होती है जब कल्पनाओं में खोते हैं तो इतने सुन्दर सुन्दर चित्र मानस पटल पर घूमते हैं जो न केवल हमें रोमांचित करते हैं बल्कि हमारी भावनाओं में परिवर्तन भी करते हैं परन्तु इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि मात्र कल्पनाओं के सहारे जीवन पार नही होता है जीवन वास्तविकता का दूसरा नाम है जो व्यक्ति वास्तविकता से परे रहता है वह सबकुछ नहीं प्राप्त कर सकता है जिसे प्राप्त करने की कामना करता है कल्पनाओं को वास्तविकता में परिवर्तित करने के लिए हमें सघन प्रयास करने होते हैं क्योंकि कर्मफल ही हमारी भविष्य की नींव होते हैं यदि हम भविष्य को मात्र कल्पनाओं के सहारे रखेंगे तो शायद जिस सफलता की हम कामना करते हैं वह कामना मात्र कामना बन कर रह जाती है। इसे संयोग ही कहेंगे कि आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी होता रहा है वह मात्र कल्पनाओं की ऊँची उड़ान ही थी।

हमारे नेतागणों द्वारा निरन्तर यह प्रयास किया जाता रहा है कि जो भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नव प्रवेषी हैं उन्हें ऊँची कल्पनाओं में बांधा जाये जिससे कि वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ सकें, इसमें बहुत लोगों को कुछ सफलता भी प्राप्त हुई परन्तु जब वास्तविकता सामने आयी तो या तो उनके मन में अश्रद्धा ने जन्म लिया या फिर अविश्वास! यही कारण रहा है कि जो सफलता इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बहुत पहले मिल जानी चाहिये वह आज तक प्रतीक्षित है ऐसा नहीं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कोई काम नहीं किया गया है, यह इसी आन्दोलन का परिणाम है कि जो आज हम इस सुखद स्थिति तक पहुँच पाये हैं। कल क्या होगा यह तो हम नहीं जानते परन्तु जो स्थिति है वह निश्चित रूप से हमें बहुत अच्छे संकेत दे रही है और यदि दिशा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो यही संकेत यथार्थ में कब बदल जाये इसमें कतई संदेह नहीं है।

प्रतीक्षा के क्षण धीरे–धीरे समाप्त हो रहे हैं परन्तु इस प्रतीक्षा के बाद जो कुछ भी प्राप्त होगा उसे हमें स्वीकार करना ही होगा परन्तु परिणामों की प्रतीक्षा करते रहना ही उचित नहीं होगा अभी तक हम जिस तरह के कार्य करते रहे हैं हमें और हमारे साथियों को उसी तरह के कार्य करते रहना होगा। आभास को वास्तविकता में बदलने का कार्य मात्र कार्य द्वारा ही सम्भव है, कार्य बोलता है ! कार्य से ही दिशा मिलती है और सबसे सच्ची बात तो यह है कि कार्य ही आपकी उपयोगिता सिद्ध करती है। उपयोगी व्यक्ति या वस्तु की बहुत ज़्यादा दिनों तक उपेक्षा नहीं की जा सकती है, एक न एक दिन अवश्य ऐसा आता है जब उपयोगिता का मूल्यांकन होता है और उपेक्षा समाप्त होती है, बस यही से प्रारम्भ होता है एक नया अध्याय इसे हम एक संयोग ही कहेंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जो भी प्राप्त होता है वह बहुत संघर्षों के बाद प्राप्त होता है 27 मार्च, 1953 का आदेश हो, 18 नवम्बर 1998 को दिल्ली हाईकोर्ट का आदेश हो या फिर 25 नवम्बर 2003 का महत्वपूर्ण आदेश इसके बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जो दुर्दशा हुई वह किसी से छिपी नहीं है परन्तु प्रबल इच्छाशक्ति के चलते 5–5–2010 का स्पष्टीकरण, इसके बाद 21 जून 2011 को कार्य करने की अधिकारिता। इन जितनी भी तिथियों में सरकारों द्वारा या न्यायालयों द्वारा जो आदेश पारित किये गये हैं वह सब कठिन प्रयासों के बाद ही सम्भव हो सका है।

भाग्य के सहारे आजतक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कुछ भी नहीं मिला है कुछ लोगा 28 फरवरी, 2017 को जारी भारत सरकार के पत्र को अनायास मानते हैं, उन्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि यह पत्र अनायास नहीं आया इस पत्र के आने के पीछे भारत के विभिन्न राज्यों के इलेक्ट्रो होम्योपैथी संगठनों का सामुहिक प्रयास है, जिन्होंने 2012 से लेकर 2017 तक निरन्तर आन्दोलन किये, जागरूकता बढाई, लोगों को जोड़ा और समाज में भी अपनी उपस्थिति अंकित करवायी, यही वह सारे कार्य थे जिन्होंने भारत सरकार पर दबाव

बनाया और सरकार को विवश होना पड़ा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की नियमितीकरण की व्यवस्था प्रारम्भ की जाये, इसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन की सबको स्वास्थ्य देने की योजना व परम्परागत व प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के उच्चीकरण की योजना ने भी सरकार पर दबाव बनाया, फलस्वरूप सरकार ने एक योजना के रूप में जो कुछ भी प्रस्तुत किया वह इस बात का संकेत दे रहे हैं कि समय भले ही बहुत लग गया हो परन्तु अब जो कुछ भी होना है वह होकर रहेगा।

हम सकारात्मक पक्ष को लेकर इस लिए उत्साहित हैं क्योंकि प्रपोज़ल के माध्यम से सरकार ने जो कुछ मांगा है सरकार उससे पहले से ही भलीभांति परिचित है, सरकार एक नहीं कई बार इस तरह की सूचनायें संग्रहित कर चुकी है, सरकार को यह भी ज्ञात है कि कितनी बड़ी संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथ देश की स्वास्थ्य सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं। ऐसे ऐसे सुदूरवर्ती इलाके जहां पर शहरों में पढ़े एलोपैथिक चिकित्सक नहीं जाते हैं वहां पर हमारा इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपनी सेवायें दे रहा है। लगभग 64 वर्ष पूर्व ही प्रदेश सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की परीक्षा ले चुकी थी तभी उसने इस चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता को समझते हुए हमें कार्य करने का अवसर दिया था और यह आश्वस्त भी किया था कि उपयुक्त अवसर आने पर इस चिकित्सा पद्धति को शासकीय संरक्षण भी प्रदान किया जायेगा समय धीरे धीरे आगे बढ़ता रहा, कुछ हमारे प्रयासों में कमी रही, कुछ सरकारी उदासीनता, परिणाम स्वरूप मामला टलता गया धीरे धीरे शासकीय व्यवस्थाओं और नीतियों में परिवर्तन आता गया आयुर्वेद और होम्योपैथी की तुलना में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को गौण रखा गया बायोकेमिक को होम्योपैथी में समाहित कर उसे मान्यता प्रदान कर दी गयी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मामला जहां का तहां बना रहा। परिस्थितियां कुछ भी रही हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जो तारतम्य था वह टुटने नहीं पाया आन्दोलन की गति कभी सुस्त, कभी तेज़ परन्तु हम अपने अधिकारों की आवाज़ निरन्तर उठाते रहे, तमाम सारी अव्यवस्थाओं और उतार चढ़ाव के बाद अन्ततः अब वह स्थिति बन ही गयी है जब भारत सरकार को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ न कुछ निर्णय लेना ही पड़ेगा।

निर्णय की प्रतीक्षा अपने स्थान पर है परन्तु इस प्रतीक्षा में हमें अपने कार्य में बाधा नहीं डालनी चाहिये क्योंकि कार्य करने के अधिकार कल भी थे और आज भी हैं और कल भी रहेंगे, हमारा संघर्ष कार्य का अधिकार मांगने का नहीं है कार्य का अधिकार तो हमको मिला ही है हमारी मांग है समकक्षता का, हम यह चाहते हैं कि जिस प्रकार अन्य प्रचलित वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को संरक्षण प्राप्त है वह संरक्षण हमें भी मिले, इसके लिए सरकार जो भी नीति तय करे वह हमें स्वीकार होगी,जहां तक बात है इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता और उपादेयता की यह तो तभी सम्भव होगा जब सरकार द्वारा किसी ऐसे अभिकरण का गठन किया जाये जो हमारे कार्यों की समीक्षा करे और उन्हें मूल्यांकित करे, हम तो 150 वर्षों से इस देश में चिकित्सा सेवा दे रहे हैं शायद देश का कोई ऐसा कोना नहीं होगा जहां इलेक्ट्रो होम्योपैथ की उपस्थिति न हो। और वह चिकित्सक अपनी सेवाओं से जनता को स्वास्थ्य लाभन न दे रहा हो।

देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथ प्रतिदिन करोड़ो लोगों के सम्पर्क में आता है और उनमें से बहुतों को स्वास्थ्य लाभ भी देता है, जाने कितने रोगी इस चिकित्सा पद्धति से लाभ प्राप्त कर रोगमुक्त हो चुके हैं, इसके उपरान्त भी यदि हमारी उपयोगिता पर कोई प्रश्नचिन्ह है तो वह हास्यस्पद बात है। जब तक सरकार द्वारा हमारे कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाता है तब तक हम भले ही वर्षों तक कार्य करते रहें हम और हमारे साथी हाशिये पर ही रहेंगे परन्तु अब समय बहुत हो चुका है, हम कब तक सरकार के आश्वासनों की प्रतीक्षा करेंगे ! अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी को किसी ठोस निर्णय की प्रतीक्षा है, सरकार इस तरह की नीति बनाये जिससे कि हमारे चिकित्सकों का नियमितीकरण हो सके और उन्हें भी सम्मान से जीने का अवसर मिले यह मात्र हमारी कल्पना नहीं है अपितु हम इसे वास्तविकता में परिवर्तित होते देखना चाहते हैं यह परिवर्तन होगा यह हमारी कल्पना की कोरी उड़ान नहीं है वरन यह वह मज़बूत सोच है जो हमें वास्तविकता और यथार्थ के धरातल पर फलीभूति करना ही होगा। हम 30 दिसम्बर की तिथि को लेकर उतने उत्साहित नहीं हैं जितने की अन्य लोग हैं चूंकि हम जानते हैं कि 30 दिसम्बर के दिन न तो कोई चमत्कार होने वाला है और न ही कोई ऐसी घोषणा जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भाग्य बदल जायेगा।

सत्य तो यह है कि 30 दिसम्बर की तिथि के बाद ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी की नियमितीकरण का अध्याय प्रारम्भ होगा, जो संस्थायें या संगठन यह दावा कर रही हैं कि 30 दिसम्बर को यह हो जायेगा, 30 दिसम्बर को सबकुछ मिल जायेगा ऐसे लोगों को अपने विचारों में परिवर्तन करना चाहिये और जो वास्तविक सच्चाई है वह अपने साथियों को बतानी चाहिये क्योंकि हमारे सीधे सादे इलेक्ट्रो होम्योपैथ अभी इस कल्पना में जी रहे है कि 30 दिसम्बर के बाद उनकी तकदीर बदल जायेगी उन्हें वह सब मिल जायेगा जो आज तक नहीं मिल पाया । तो उन्हें यह बताना होगा कि तकदीर भी बदलेगी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तश्वीर भी बदलेगी पर यह सब 30 दिसम्बर के बाद सरकार के रूख पर बहुत कुछ निर्भर करेगा अब हमें कमेटियों और रिपोर्ट की प्रतीक्षा नही करनी चाहिये अपितु 30 दिसम्बर के

शेष अंतिम पेज पर

सकारात्मक परिणामों के प्रति आश्वस्त रहें

सभी बोर्ड से सम्बद्ध

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ०प्र० से जुड़े सभी साथियों को इस बात से आश्वस्त रहना चाहिये कि आने वाले दिनों में उन्हें कुछ अच्छे अधिकार प्राप्त होने वाले हैं इन अधिकारों को मात्र पा लेना ही हमारा लक्ष्य नहीं है बल्कि हम उन ऊँचाईयों को छूना चाहते हैं जिन्हें छूने के लिए हम वर्षों से प्रयास शील हैं। बोर्ड का अभी तक यह इतिहास है कि यह संगठन सकारात्मक दिशा में काम करता हुआ लगातार आगे बढ़ रहा है यही कारण है कि मात्र प्रदेश ही नहीं अपितु पूरे देश में इस संगठन का अपना अलग स्थान है हमारा यह प्रयास रहत है कि जो कुछ भी संकल्प लिया जाये उसे पूरा किया जाये।

आप सबको याद होगा कि वर्ष २००३ से पूर्व इस प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बहुत सारी शीर्ष संस्थायें कार्य कर रही थीं यह संस्थायें शैक्षणिक गतिविधियों में भी अपने हाथ आज़माते थे परन्तु जैसे ही न्यायालय का एक आदेश आया कि सभी प्रमाण प्रत्र प्रदाता संस्थायें अपना पंजीयन शासन में करायें प्रदेश में मात्र बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ०प्र० ऐसी संस्था थी जिसने की पहल की और अन्ततः सफ़लता भी अर्जित की।

४ जनवरी, २०१२ का शासनादेश उसी का परिणाम है, एक बार फिर हम सकारात्मक धारा में चलते हुए नया इतिहास लिखने जा रहे हैं जिसमें आप सब की सहभागिता होनी चाहिये यह विचार बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ०प्र० से सम्बद्ध संस्थानों /अध्ययन केन्द्रों के संचालकों की एक बैठक में बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० के चेयरमैन डा० एम० एच० इदरीसी ने व्यक्त किये।

डा० इदरीसी ने बताया कि बहुत तेज़ी के साथ परिस्थितियां बदल रही हैं,जैसे ही ३० दिसम्बर का समय पार होगा स्थितियों में बहुत तेज़ बदलाव आयेगा और यदि हमारे साथियों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में रहना है तो उन्हें परिस्थितियों के साथ अपने आप में बदलाव लाना होगा बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० आपके हितों के लिए प्रतिबद्ध है और हम यह विश्वास दिलाते हैं कि आपके हितों का हनन नहीं होने देंगे परन्तु अपने हितों के लिए जो व्यवस्थायें आपको करनी हैं वह आपको करनी ही होंगी पिछली बैठक में अपने सभी साथियों से कहा था कि ३० नवम्बर तक अपनी व्यवस्थायें ठीक कर लें आज २७ नवम्बर है जो कुछ भी जानकारी हम आपको दे रहे हैं वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आपको क्या करना है ?हमने यह वादा किया था कि ३० दिसम्बर के बाद आपको सुखद समाचार मिलेंगे, १३ नवम्बर का आई०सी०एम० आर० का यह पत्र स्वतः स्पष्ट कर रहा है कि परिणाम क्या होंगे और किसके लिए होंगे।

इस बैठक को सम्बोधित करते हुए बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० के प्रवक्ता डा० प्रमोद शंकर बाजपेयी ने कहा कि लगातार किये जा रहे प्रयास रंग ला रहे हैं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद का यह पत्र इस बात का स्पष्ट साक्षी है कि किस तरह से आपका संगठन आपके हितों की लड़ाई लड़ रहा है ! धीरे-धीरे समय सीमा घट रही है हमने पूर्व में आपको जो अनुमान दिया था लगभग लगभग हमारा अनुमान सही सिद्ध हो रहा है डिपार्टमेन्ट ऑफ़ हेल्थ रिसर्च के पास आप और आपका मामला है, सकारात्मक परिणाम आयेंगे यह मात्र हमारी कल्पना नहीं है बल्कि अपने कार्यों के प्रति विश्वास है।

जितनी मेहनत हम लोग कर रहे हैं आपसे भी अपेक्षा कर सकते हैं कि आप भी मेहनत करें जिस तरह से बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० का इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में एक अलग स्थान है उसी तरह से आप भी अपने क्षेत्र में इतना कार्य करें जिससे कि आप की अलग पहचान हो सके। यह समय वास्तविक कार्य का है।अफवाहों और भ्रम से दूर रहें थोड़ी सी प्रतीक्षा और फिर सबकुछ आपके हाथ में।

कार्यक्रम में बोर्ड के रजिस्ट्रार डा० अतीक अहमद ने दिसम्बर मास सेमेस्टर परीक्षाओं के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। इस बैठक में डा० मिथलेश कुमार मिश्रा व नसीम इदरीसी की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही।

बैठक में बोर्ड से सम्बद्ध संस्थानों /स्टडी सेन्टरों के अधिकांश संचालको ने अपनी उपस्थित दर्ज करायी।

वास्तविकता से दूर ..... पेज 3 से आगे

बाद कुछ दिनो की प्रतीक्षा के उपरान्त हमें सरकार से यह जानकारी लेनी चाहिये कि प्रपोजल के नाम पर आपने जो कुछ भी हमसे मांगा है उसपर भारत सरकार की क्या दृष्टि है चूंकि यह निर्णय किसी एक व्यक्ति को नहीं लेना है इसके लिए बकायदा एक भारी भरकम कमेटी बनाई गयी है इस कमेटी में कुछ वैज्ञानिक कुछ शिक्षाविद व कुछ प्रशासनिक अधिकारी शामिल है इन सबका सामुहिक सुझाव ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक नई दिशा देगा जब तक कोई परिणाम नहीं आते तब तक सकारात्मक ऊर्जा के साथ हमें प्रतीक्षा करनी चाहिये परन्तु इस प्रतीक्षा में कोरी कल्पना न हो बल्कि वास्तविकता का दर्शन भी हो। क्योंकि कभी कभी अति कल्पनायें कष्टकारी हो जाते है और वास्तविकता कुछ पल को कष्ट तो देती है परन्तु एक नई राह भी बना देती है। हम और हमारे साथी जुझारू है हमें इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है हम हर बाधा को पार करने की ताकत और साहस रखते है और अब स्थिति बनती हुई दिख रही है इसलिए नकारात्मकता को स्थान नहीं मिलना चाहिये। आने वाला नया वर्ष हमारे जीवन में न केवल नई आशाओं का संचार करेगा बल्कि नये रूप में नये कलेवर में जीने की कला भी सीखायेगा। यह मात्र कल्पना नहीं है बल्कि यह वह वास्तविकता है जो आने वाले कुछ दिनों में हम सब के सामने होगी।

बोर्ड की सेमेस्टर परीक्षायें 26 दिसम्बर से

F.M.E.H. की सेमेस्टर तथा A.C.E.H. की परीक्षा आगामी 26 दिसम्बर, 2017 से प्रस्तावित हैं। F.M.E.H. एवं A.C.E.H. परीक्षाओं की सेमेस्टर परीक्षा का वार्षिक कैलेण्डर आपको पूर्व में जारी किया जा चुका है। सितम्बर सेमेस्टर के लिये जो छात्र परीक्षा में बैठने से वंचित रह गये थे वे दिसम्बर सेमेस्टर में सम्मिलित हो सकते हैं ऐसे छात्र अपने परीक्षा फ़ार्म शुल्क के साथ अपने केन्द्र के के माध्यम से बोर्ड कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं। *यह जानकारी बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने गज़ट को एक भेंट में दी।*

परीक्षा कार्यक्रम इस प्रकार है :—

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION December 2017

Name of the course	26 th December, 2017 Tuesday	27 th December, 2017 Wednesday	28 th December, 2017 Thursday	29 th December, 2017 Friday
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy &Philosophy	XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	M.Jurisprudence & Toxicology	Dietetics	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	Materia Medica	Practice of Medicine	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	Pharmacy- Philosophy & Materia Medica	Pathology-Hygiene and M.Jurisprudence	Midwifery Gynics, Opthalmology & Practice of Med.

Timing → 8:00 A.M.to 11:00 A.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge